قُلْ إِن كُنتُمْ تُحِبُّونَ ٱللَّهَ فَٱتَّبِعُونِى يُحْبِبْكُمُ ٱللَّهُ وَيَغْفِرْ
لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۚ وَٱللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣١﴾ قُلْ أَطِيعُوا۟ ٱللَّهَ
وَٱلرَّسُولَ ۖ فَإِن تَوَلَّوْا۟ فَإِنَّ ٱللَّهَ لَا يُحِبُّ ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿٣٢﴾ * إِنَّ
ٱللَّهَ ٱصْطَفَىٰٓ ءَادَمَ وَنُوحًا وَءَالَ إِبْرَٰهِيمَ وَءَالَ عِمْرَٰنَ عَلَى
ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٣٣﴾ ذُرِّيَّةًۢ بَعْضُهَا مِنۢ بَعْضٍ ۗ وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٤﴾
إِذْ قَالَتِ ٱمْرَأَتُ عِمْرَٰنَ رَبِّ إِنِّى نَذَرْتُ لَكَ مَا فِى بَطْنِى
مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّىٓ ۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا
وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّى وَضَعْتُهَآ أُنثَىٰ وَٱللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا
وَضَعَتْ وَلَيْسَ ٱلذَّكَرُ كَٱلْأُنثَىٰ ۖ وَإِنِّى سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّىٓ
أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ ٱلشَّيْطَٰنِ ٱلرَّجِيمِ ﴿٣٦﴾ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا
بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۖ كُلَّمَا دَخَلَ
عَلَيْهَا زَكَرِيَّا ٱلْمِحْرَابَ وَجَدَ عِندَهَا رِزْقًا ۖ قَالَ يَٰمَرْيَمُ أَنَّىٰ
لَكِ هَٰذَا ۖ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِندِ ٱللَّهِ ۖ إِنَّ ٱللَّهَ يَرْزُقُ مَن يَشَآءُ
بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٧﴾ هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُۥ ۖ قَالَ رَبِّ هَبْ لِى
مِن لَّدُنكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۖ إِنَّكَ سَمِيعُ ٱلدُّعَآءِ ﴿٣٨﴾ فَنَادَتْهُ
ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ يُصَلِّى فِى ٱلْمِحْرَابِ أَنَّ ٱللَّهَ يُبَشِّرُكَ
بِيَحْيَىٰ مُصَدِّقًۢا بِكَلِمَةٍ مِّنَ ٱللَّهِ وَسَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِّنَ
ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿٣٩﴾ قَالَ رَبِّ أَنَّىٰ يَكُونُ لِى غُلَٰمٌ وَقَدْ بَلَغَنِىَ
ٱلْكِبَرُ وَٱمْرَأَتِى عَاقِرٌ ۖ قَالَ كَذَٰلِكَ ٱللَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿٤٠﴾ قَالَ

رَبِّ ٱجۡعَل لِّيٓ ءَايَةٗۖ قَالَ ءَايَتُكَ أَلَّا تُكَلِّمَ ٱلنَّاسَ ثَلَٰثَةَ أَيَّامٍ
إِلَّا رَمۡزٗاۗ وَٱذۡكُر رَّبَّكَ كَثِيرٗا وَسَبِّحۡ بِٱلۡعَشِيِّ وَٱلۡإِبۡكَٰرِ ٤١

Theme	
Commandment to obey and follow the Prophet. Adam, Noah, the families of Ibrahim and Imran were exalted. Birth and growth of Maryam (Mary - the mother of Jesus). Supplication of Zakariya for granting him a son and Allah granted his wish and gave him a son called Yahya (John).	नबी ﷺ की इताअत और पैरवी का हुक्म। आदमं, नूहं, ख़ानदान-ए-इब्राहीमं और ख़ानदान-ए-इमरान को फ़ज़ीलत अता की गई। मरयमं (हज़रत ईसां की वालिदा) की पैदाइश और परवरिश। ज़करियां की औलाद-ए-नरीना के लिए दुआ, जिसे अल्लाह तआला ने क़बूल फ़रमाया और उन्हें यहयां नामी बेटा अता फ़रमाया।
Tarjumani	
Say to the people, O Muhammad: "If you sincerely love Allah, then follow me; Allah will also love you and forgive you your sins. Allah is Forgiving, Merciful." Also tell them, "Obey Allah and His Rasool." Inspite of this, if they turn back, then warn them, that Allah does not love the disbelievers. Indeed Allah	ऐ नबी, लोगों से कह दो कि "अगर तुम हक़ीकत में अल्लाह से मुहब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी इखतियार करो, अल्लाह तुमसे मोहब्बत करेगा और तुम्हारी खताओं से दरगुज़र फ़रमाएगा | वह बड़ा माफ़ करनेवाला और रहीम है |" उनसे कहो कि "अल्लाह और रसुल की इताअत कबूल करो |" फिर अगर वह तुम्हारी यह दावत कबूल न करें, तो यकीनन यह मुमकिन नहीं है कि

exalted Adam, Nuh (Noah), the family of Ibraheem (Abraham) and the family of 'Imran above all the worlds. They were the offsprings of one another. Allah hears all and knows all. Allah heard when the wife of 'Imran said, "O my Rabb! I dedicate to Your service what is in my womb. Please accept it from me. You Alone hear all and know all." When she gave birth to a girl instead of a boy, she said: "My Rabb! I have given birth to a girl," Allah knew very well what she had delivered and that the male is not like the female. I have named her Maryam (Mary) and I seek Your protection for her and her children from the mischief of Shaitan, the accursed." Her Rabb graciously accepted her. He made her grow up as a good person and entrusted her to the care of Zakariyya. Whenever Zakariyya entered the sanctuary to see her, he found with her food. He asked, "O Maryam! From where did you	अल्लाह ऐसे लोगों से मोहब्बत करे, जो उसकी और उसके रसूल की इताअत से इनकार करते हों	अल्लाह ने आदम और नूह और आले-इबराहीम और आले-इमरान को तमाम दुनिया-वालों पर तरजीह देकर (अपनी रिसालत के लिए) मुंतखब किया था	ये एक सिलसिले के लोग थे, जो एक-दूसरे की नस्ल से पैदा हुए थे	अल्लाह सब कुछ सुनता और जानता है	(वह उस वक्क्त सुन रहा था) जब इमारत की कह रही थी कि "मेरे परवरदिगार, मैं इस बच्चे को जो मेरे पेट में है तेरी नज़्र करती हूँ, वह तेरे ही काम के लिए वक्फ़ होगा	मेरी इस पेशकश को कबूल फरमा	तू सुनने और जाननेवाला है |" फिर जब वह बच्ची उसके यहाँ पैदा हुई तो उसने कहा, "मालिक, मेरे हाँ तो लड़की पैदा हो गई है— हालाँकि जो कुछ उसने जना था, अल्लाह को उसकी ख़बर थी— और लड़का लड़की की तरह नहीं होता	खैर, मैंने उसका नाम मरयम रख दिया है और मैं उसे और उसकी आइन्दा नस्ल को शैतान मरदूद के फितने से तेरी पनाह में देती हूँ |" आख़िरकार उसके रब ने उस लड़की को बखुशी कबूल फरमा लिया, उसे बड़ी अच्छी लड़की

get it?" She replied, "It came from Allah. In fact, Allah gives to whom He wants without measure." Thereupon, Zakariyya prayed to his Rabb saying: "O my Rabb! Grant me a righteous child as Your special favor; surely, You hear all prayers." As he stood praying in the Mihrab (a prayer place in the sanctuary), the angels called out to him saying: "Allah gives you good news of a son to be named Yahya (John), he will confirm the word of Allah, he will be a great leader, chaste and a Prophet from among the righteous." He said: "O my Rabb! How can I have a son now that I have reached an old age and my wife is barren?" "Such is the will of Allah," was the answer, "Allah does what He wants." Zakariyya said: "My Rabb! Grant me a sign." It was said: "Your sign is that you will not be able to speak to people for three days except through gestures. During this time you should remember

बनाकर उठाया, और ज़करीया को उसका सरपरस्त बना दिया | ज़करीया जब कभी उसके पास मेहराब में जाता तो उसके पास कुछ न कुछ खाने-पीने का सामान पाता | पूछता : मरयम, यह तेरे पास कहाँ से आया? वह जवाब देती : अल्लाह के पास से आया है, अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब रिज्क देता है | यह हाल देखकर ज़करीया ने अपने रब को पुकारा, "परवरदिगार, अपनी कुदरत से मुझे नेक औलाद अता कर | तू ही दुआ सुननेवाला है |" जवाब में फ़रिश्तोंने ने आवाज़ दी, ज़बकि वह मेहराब में खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था, कि "अल्लाह तुझे यहया की ख़ुशख़बरी देता है | वह अल्लाह की तरफ़ एक फ़रमान की तस्दीक करनेवाला बनकर आएगा | उसमें सरदारी व बुज़ुर्गी की शान होगी | कमाल दर्जे का ज़ाब्ता होगा | नुबूवत से सरफ़राज़ होगा और सालिहीन में शुमार किया जाएगा |" ज़करीय ने कहा, "परवरदिगार,भला मेरे हाँ लड़का कहाँ से होगा? मैं तो बहुत बूढ़ा हो चूका हूँ और मेरी बीवी बाँझ है |" जवाब मिला, "ऐसा ही होगा, अल्लाह जो चाहता है करता है |" अर्ज़ किया, "मालिक, फिर कोई

your Rabb very much and glorify Him in the evening and in the morning."	निशानी मेरे लिए मुक़र्रर फरमा दे |'' कहा, "निशानी यह है कि तुम तीन दिन तक लोगों से इशारे के सिवा कोई बात-चीत न करोगे (या न कर सकोगे) इस दौरान में अपने रब को बहुत याद करना और सुबह व शाम उसकी तस्बीह करते रहना |''
Tafsir	